

## ■ पूजा मेहरोत्रा

# भा

रत चाय के शौकीनों का देश है लेकिन इस देश में बेहतरीन चाय गली, चौक, नुक्कड़ के किसी कोने में स्टोव पर चाय बनती तो मिल जाएगी लेकिन यदि आप किसी चाय के विशेष लाउंज या बार में पीने की इच्छा रखते हैं तो बमुश्किल किसी शहर में एक ही टी बार या लाउंज मिलेगा। किसी वातानुकूलित रेस्तरां में लेमन चाय, मसाला चाय, आइस टी तो फिर भी मिल जाएगी लेकिन यदि आप चाय के विशेष आउटलेट में बैठकर अलग-अलग तरह की चाय का आनंद लेना चाहते हैं तो यह बहुत मुश्किल है। इन दिनों कुछ जांबाज युवाओं ने टी बार खोले हैं और उन्हें नए अंदाज में पेश किया है। इसमें सफल भी हो रहे हैं। ऑक्सफोर्ड बुक स्टोर, टाटा टी, बाघ-बकरी सहित कई निजी व्यवसायियों ने टी लाउंज बनाए हैं। यह बात अलग है कि 'चाय बार' आज भी अपनी पहचान को तरस रहे हैं लेकिन वे दिन दूर नहीं कि ये लाउंज भी उसी कतार में खड़े होंगे जिसमें विदेशी कॉफी बार, कैफे कॉफी डे, चवाजा, बरिस्टा आदि खड़े हैं।

बंगलूरु में 'चायपती टैफे' के नाम से टी लाउंज चलाने वाले चिराग यादव कहते हैं कि भारत में टी लाउंज पॉपुलर न होने का सबसे बड़ा कारण है कि यहां हर घर में कोई-न-कोई बहुत अच्छी चाय बना लेता है या फिर हर शहर में, हर गली में चायवाला बैठा है। वह अच्छी चाय बनाता है, इसलिए कोई भी चाय के लिए 40-50 रुपये खर्च करना नहीं चाहता। लेकिन अब समय बदल रहा है। लोग विभिन्न प्रकार की चाय पीना पसंद कर रहे हैं। इसलिए टी लाउंज भी सामने आ रहे हैं। देश में भले ही टी लाउंज की श्रृंखला न हो लेकिन दिल्ली में पैशन-माइ कप ऑफ टी, टापरी, जयपुर में, इनफाइनिटी, चायपती और चाय प्वाइंट बंगलूरु में, द टी जंक्शन कोलकाता में, टी पॉट, कोचीन में, टी सेंटर मुंबई में और कोलकाता में ऑक्सफोर्ड बुक स्टोर 'चाबार' अकेला बार है जो लगभग हर बुक सेंटर में चा बार चल रहा है। बाघ-बकरी चाय कंपनी ने भी दिल्ली, मुंबई में टी लाउंज बनाए हैं जहां आप चाय खरीदने से पहले अपनी मनपसंद चाय की चुस्की ले सकते हैं। साथ-साथ वहां रखी गई अन्य चाय की चुस्की का आनंद ले सकते हैं। दिल्ली के दरियागंज में स्थित 'आपकी पसंद चाय सां-चा' है जहां हर प्रकार की चाय को खरीदने से पहले चाय के स्वाद लेने की व्यवस्था है।

बाघ-बकरी चाय के एक्ज्यूक्यूटिव डायरेक्टर पराग देसाई कहते हैं कि देश में टी लाउंज गिने-चुने हैं। चाय बार या लउंज खोलने की कोशिश पहले नहीं की गई है। टाटा टी कंपनी ने बंगलूरु में 2008 में 'चाय' नाम से आउटलेट खोला था लेकिन जल्द ही

# अब टी बार भी खुल रहे हैं



उन्होंने इसे बंद कर दिया। उसके बाद फ्यूचर ग्रुप ने चाय और

समोसा के नाम से 2005 में 'चमोसा' आउटलेट खोला लेकिन वो इसमें बहुत सफल नहीं हो पाए। उन्होंने इस आउटलेट का नाम बदल दिया। इसे 'लाइव किचन' में तब्दील कर दिया। इसमें स्नैक्स, मीठा और आम लोगों की पहुंच वाला नाश्ता परोसा जा रहा है। टी बार फिलहाल भारत में 40-50 ही होंगे जबकि कॉफी कैफे की संख्या 1800 से अधिक है।

जयपुर के टापरी नाम से टी बार चला रहे अंकित बोहरा कहते हैं कि चाय पीने वालों का बाजार भारत में बहुत बड़ा है। भारत में हर सेकेंड चाय की खपत होती है और हर दूसरे सेकेंड लोग चाय पी रहे होते हैं। बंगलूरु में चायपती के फाउंडर चिराग यादव कहते हैं कि चाय बार का बहुत बड़ा बाजार है लेकिन चाय पीने लोग आपके बार तक आएँ इसके लिए कुछ अलग करने की जरूरत है। भले ही आपकी दुकान में काम करने वाला स्टाफ अलग हो लेकिन चाय जो पेश की जा रही है उसका स्वाद अलग नहीं होना चाहिए, क्योंकि अच्छी चाय ही आपके ग्राहक को बार-बार आपके दुकान तक लाती है। यदि आप एक कप चाय के लिए 40 रुपये ले रहे हैं तो उस चाय को पीने के बाद ग्राहक को 40 रुपये वसूल किए हैं, ऐसा भी करना

चाहिए। जिस दिन हमने इस कांसेप्ट पर चाय बनानी और बेचनी शुरू कर दी उस दिन टी-बार भारत में पॉपुलर होगा। मैंने बंगलूरु में चार टी लाउंज बना लिए हैं। अब पुणे, मुंबई, अहमदाबाद जैसे शहरों में चायपती स्टोर खोलने की योजना है। उसके बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में जाने की योजना है। चायपती में दूधवाली चाय तो सिर्फ एक ही बेची जाती है साथ ही नीबू, मिंट, अदरक, कटिंग ग्लास, कुल्हड़ चाय सहित प्यार के साथ पड़ोसी जाती है। जयपुर की चाय की दुकान टापरी में 40 से अधिक तरह की चाय ग्राहकों को पेश की जाती है। टापरी के पार्टनर सौरभ बताते हैं कि हमारे यहां दूध की चाय, बिना दूध की चाय, हर्बल चाय और रेगुलर कॉफी के साथ स्नैक्स, पास्ता पेश किया जाता है। कॉलेज, स्कूल के छात्रों के साथ युवाओं और पर्यटकों में टापरी बहुत प्रसिद्ध है। इन सबके बीच सबसे मजेदार बात यह है कि टी बार और टी लाउंज का कांसेप्ट एमबीए और इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों की सोच है जिसे उन्होंने अमली जामा पहनाया है और नुक्कड़ की चाय को ऐसी और सजे-संवरे कमरे तक पहुंचाया है। यहां सिर्फ चाय ही नहीं परोसी जाती है साथ ही यहां युवाओं को मिलता है गाने-बजाने का प्लेटफॉर्म और अपनी कला दिखाने का मौका भी।

## क्या कहते हैं चाय के दीवाने

### बदन दर्द दूर हो जाता है



चाय पीने से ताजगी बनी रहती है। थकान दूर हो जाती है। चाय एक नशे की तरह है। घर में बहुत सारा काम होता है जिससे बहुत थकान हो जाती है, ऐसे में चाय की एक-एक घूंट शरीर में एनर्जी भर देती है। इससे बदन दर्द दूर हो जाता है।

■ मंजू (गृहिणी), बेगुसराय

### चाय से इंद्रियां खुल जाती हैं



चाय की एक-एक चुस्की आपको दिनभर के तनाव को दूर करने के साथ-साथ आपकी एकाग्रता को बढ़ाती है। मैं कितने कप चाय पीता हूँ, यह तो पता नहीं है क्योंकि मैंने गिनती ही नहीं की है लेकिन हर एक चुस्की के साथ ही अपनी खबर लिखता हूँ और खबर लिखने के लिए एकाग्रता बहुत जरूरी होती है। जब भी आप कोई गंभीर काम कर रहे हों या फिर गंभीर स्टोरी लिख रहे हों और खबर न बन रही हो तो जैसे ही चाय की चुस्की लेते हैं, आपकी सारी इंद्रियां खुल जाती है और काम आसान लगने लगता है। वे लोग जिन्हें दूसरे पेय पदार्थ पीने की आदत नहीं होती है उनके लिए दोस्तों के साथ मिल-बैठने के लिए चाय ही सबसे अधिक उपयोगी पेय है। चाय पीने से ताजगी महसूस होती है। थकावट भी दूर होती है।

■ सुजीत ठाकुर (पत्रकार), दिल्ली

### चाय मेरी भूख मारती है



मुझे चाय इसलिए पसंद है क्योंकि एक तो यह भूख को मारती है दूसरा मुझे चाय पीकर एनर्जी महसूस होती है और मैं दोगुनी शक्ति से अपने काम में लग जाता हूँ। चाय की तलब मुझे दिन में दस बार तो लगती ही है जिसके बाद मैं चाय पीकर अच्छा महसूस करता हूँ।

■ अजय कुमार यादव (छात्र), साहिबाबाद

### चाय से राहत मिलती है



चाय पीना मेरा शौक है। मैं घर में रहूँ या बाहर कई-कई बार चाय जरूर पीता हूँ। मेरे ऑफिस आने वाले सभी लोगों को चाय परोसी जाती है जिनके साथ मैं भी इसका लुप्त उठाता हूँ। मुझे लगता है कि चाय से दिनभर की भाग-दौड़ भरी जिंदगी को राहत प्रदान करती है।

■ जितेंद्र तिवारी (कारोबारी)

### चाय की चाह



दैनिक जीवन में चाय के बगैर कल्पना करना बेमानी है। बचपन में चाय रोटी-धीनमक के साथ नाश्ते का अभिन्न अंग हुआ करती थी। सुबह की शुरुआत से चाय जब एक बार शुरू होती है तो ऑफिस की मीटिंग से लेकर आम मुलाकात का जरिया बनती है यह चाय। इसी चाय के चलते न जाने कितने लोगों से बात बनी और न जाने कितनों से बिगड़ गई। डॉक्टरों की सख्त हिदायत के बावजूद चाय की आदत न छूट सकी। चाय छोड़ने की कई बार नाकाम कोशिशों के बावजूद चाय की चाहत कम न हुई। आज भी बगैर चीनी ही सही चाय की चुस्की अनवरत जारी है।

■ संदीप मिश्र, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, दिल्ली

### इसकी महक से ऊर्जा आ जाती है



मैं दिन भर में 15-20 कप चाय पी लेती हूँ। चाय पीना मुझे अच्छा लगता है। इसकी महक से ही पूरी शरीर में ऊर्जा आ जाती है और किसी काम को यदि करने का मन नहीं हो तो भी आप उसे कर ही लेते हैं। मैं सुबह सुबह ही आठ-दस कप चाय पी लेती हूँ। टंड में चाय पीने का मजा थोड़ा अलग आता है। चाय कब से इस तरह पी रही हूँ पता नहीं लेकिन चाय पीने की आदत बच्चों की पढ़ाई की वजह से पड़ी। जब मेरे बच्चे पढ़ रहे थे तब तो मैं उन्हें रात में चाय बना कर देती थी तो उनके साथ बैठकर चाय पीती थी और फिर सोती थी। चाय पीने से एनर्जी मिलती है और भूख भी नहीं लगती है।

■ शोभा मेहरोत्रा (गृहिणी), बिहार

### थकता हूँ तो चाय पीता हूँ



मैं पिछले 20 साल से चाय पी रहा हूँ दिनभर में 10 से 12 कप तक चाय हो ही जाती है। घर हो या दफ्तर मुझे वहां चाय जरूर चाहिए। चाय पीकर मुझे शरीर में स्फूर्ति का अहसास होता है। जब भी मैं अपने को थका हुआ महसूस करता हूँ चाय जरूर पीता हूँ। मुझे सादा चाय पसंद है। टीबैग मैं नहीं पीता।

■ डॉ. महेश चौधरी (प्राध्यापक)

### तनाव हटाती है



चाय पीकर मैं अपने को तरोताजा महसूस करता हूँ, दिनभर में कम से कम आठ बार तो चाय पीता हूँ और कभी-कभी तो पंद्रह कप तक हो जाती हैं। मुझे आज तक चाय के सेवन से कोई नुकसान नहीं हुआ बल्कि जब भी मैं तनाव में होता हूँ तो दोस्तों के साथ चाय पीकर अपना तनाव दूर करता हूँ।

■ रजनीश शर्मा (टीवी पत्रकार)

## चाय पीने पर तिलक को मांगनी पड़ी माफी

चाय आज भले ही आज अघोषित रूप से एक भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई हो, लेकिन एक समय इसे पीना गलत माना जाता था। 4 अक्टूबर 1890 में जब पुणे पंचहौद मिशन हुआ तो उसमें बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले समेत कई गणमान्य लोग शामिल हुए। इन्हें गोपाल राव जोशी (जिनका ईसाई मिशनरी के लोगों में आना-जाना था) ने रेवरंड रिचिंग्टन के माध्यम से बुलवाया था। इस समारोह में मंचासीन लोगों के सामने जब चाय परोसी गई तो उसमें से कुछ लोगों ने तो उसे पिया, जबकि कुछ ने सिर्फ उसे उठाकर रख दिया था। उस समय तो यह बात तो आई-गई हो गई लेकिन छह महीने बाद गोपाल राव जोशी ने इस घटना की खबर 'पुणे वैभव' नामक समाचार पत्र में छपी। अखबार के माध्यम से जब चाय पीने की खबर पुणे में फैली तो उस पर लोगों ने अच्छा खासा विरोध दर्ज किया। 1891 तक पुणे के ब्राह्मणों ने तिलक समेत उन मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों के घर काम करने वालों को बहिष्कृत करना शुरू कर दिया। चाय पीने का मामला बढ़ते-बढ़ते अदालत तक जा पहुंचा। पुणे के ब्राह्मणों ने चाय पीने की घटना की शिकायत शंकराचार्य से भी की। ब्राह्मणों के विरोध जताने पर जनवरी, 1892 में शंकराचार्य ने उन्हें लिखकर दिया कि चाय पीकर इन गणमान्य लोगों ने बड़ी भारी गलती की है। इसके बाद बाल गंगाधर तिलक द्वारा सभी से माफी मांगे जाने के बाद ही यह मामला खत्म हुआ था।

दूध के दाम दो गुने से ज्यादा बढ़ गए, जबकि आम खाद्य पदार्थों की तरह दूध में मिलावट भी एक राष्ट्रीय समस्या बन गया है। बीते दिनों एक सर्वे में देश के अधिकांश शहरों में 60 से 90 प्रतिशत दूध मिलावट पाए जाने के दावे

किए गए थे। शायद यही कारण है कि दूध न सिर्फ आम आदमी बल्कि उन दुग्ध उत्पादन में जुटे ग्रामीणों और ग्वालों के बच्चों तक को मुहैया नहीं हो पा रहा है।

ऐसा नहीं है कि चाय को सिर्फ दूध से ही चुनौती मिल

रही है। चाय के मुकाबले में कॉफी भी खड़ी हुई है। कॉफी से उचित दूरी बनाए रखने वाले उत्तर भारतीय भी अब इसके मुरीद हो रहे हैं। यही कारण है कि भले ही उत्तर भारत में भले ही कोई टैफे न दिखाई दे लेकिन कैफे बहुतायत दिखाई दे जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय कॉफी संगठन के अनुसार वर्ष 2010 में भारतीय एक लाख टन से भी अधिक कॉफी गटक गए। यही कारण है कि दक्षिण भारत के प्रतीक चिन्हों में से एक कॉफी को भी राष्ट्रीय चिन्ह बनाए जाने की मांग हो रही है। ऐसे में माना यही जा रहा है कि राष्ट्रीय पेय के लिए हो रही जंग में दूध और चाय में वही जीतेगा जो सेहत, सुलभता और कीमत के पैमाने पर खरा उतरेगा। वैसे चाय घोषित हो या न हो राष्ट्रीय पेय, वह हमारा अघोषित राष्ट्रीय पेय है। इसी तरह अघोषित राष्ट्रीय पेय कोला भी बन रहा है और देशी-विदेशी शरबत तो है ही, जिसके जरिए राज्य सरकारों को तगड़ा राजस्व मिलता है।